गोविन्दलीलामृत भाषा

एवं

पद्यावली भाषा

★

रचयिता क्रमतः

श्री शीतलदासजी (प्रेमसखी)

एवं

"शिवपद" जी



प्रकाशकः—

कृष्णदास बाबा

कुसुमसरोवर

[२०२०] [न्योछावर ।)

भज-निताइ गौर राधे श्याम ।
जप-हरे कृष्ण हरे राम ॥

प्रस्तुत पहिला ग्रन्थ के रचयिता श्रीशीतलदास जी महाराज हैं आप का उपनाम (सिद्धनाम) "प्रेम सखी" है । पदों की अधिक संख्या में उन्होंने "प्रेमसखी" एवं कहीं कहीं "शीतलदास" इस नाम का प्रयोग किया है । शीतलदास के नाम से कई कवि सुनने में आते हैं परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ स्थित पदों के रचयिता शीतलदास जी गौडेश्वर सम्प्रदाय के वैष्णव माने जाते हैं । इस सम्प्रदाय में वैष्णवी नाम करण में "शीतलदास" इस नाम का प्रयोग है, भगवान् का एक नाम शीतल भी है । यह पुस्तिका गोविन्दलीलामृत के आधार पर लिखी गई है । कवि ने हृदय में भावमय महान् उच्छ्वास रख कर थोड़े से पदों में उस विशाल गोविन्द लीलामृत ग्रन्थ का मनोहर जो चित्रण किया,वह एक अलौकिक शक्ति का परिचायक है । जिसकी भित्ति परकीया भावमयी है, जिससे रस का चरम आस्वादन होता है एवं जो श्रीराधागोबिन्द का हृदय के सर्वोपरि निगूढ़ तत्व वस्तु है । स्थूल हृदय वाले इस की गहीडी अंत तरंगो में गोता लगाने में असमर्थ होकर नाना प्रकार की कष्ट कल्पना कर डारते हैं । राधा गोविन्द के यह भावमय विहार ब्रज में नित्य रूप से विराजमान है । इस परकीया विहार में नित्य विहार की स्थिति किस रूप से है इसका सिद्धान्त गौड़ीय आचार्य्यों ने अद्भुत युक्ति के साथ अपने अपने ग्रन्थों में चित्रण किया हैं । ग्रंथकार का पूरा परिचय अज्ञात है । पाटना गुलजारवाग गोस्वामि श्रीकृष्ण चैतन्य महाराज की लाईब्रेरी में से यह पुस्तक हमें मिला था । आशा है रसिक सज्जन इसका सरस आस्वादन करेंगे ।

दूसरी पुस्तक के रचयिता शिवपद जी हैं, आपने पदों की भणिता में "शिवपद" "शिवांघ्रि" इस प्रकार प्रयोग किया है तथा स्वयं अपने को गौड़ीय सम्प्रदाय अनुगत बतलाया है। ग्रन्थ के प्रारंभ में आपने "श्रीहरि देव" जी को अपने गुरु एवं "राधा-कृष्ण" जी को पिता रूप से कहा है।

"गौडेश्वरकुलाम्भोजे श्रीमच्छयामल विग्रहः।
परमानन्दरसिको हरिदेवमहाप्रभुः ॥
तत्पदेऽसौ दासमतिः"।
शेष में भी "जय जय जय श्रीगुरुहरिदेव ॥"

इसकी पुरानी हस्त लिखित कापी हमारे पास मौजूद है। पत्र संख्या डबल १० है। कापी की लम्बाई ९ इंच एवं चौड़ाई ६ इंच है। किसी पृष्ठ में २१ किसी में २२ व किसी में २३ लाईन मौजूद हैं कागज देसी सांगानिर हैं। काला स्याही न अति घना न अति रूखा है। डवल पत्र के पहिला पृष्ठ में ऊपर भाग पर "श्री जी" पृष्ठ के ऊपर जहाँ संख्या दी गई है वहाँ पास में "श्रीजी" एवं दूसरे पृष्ठ में ऊपरि भाग में "श्री" यह शब्द लिखा गया है। प्रथम पृष्ठ में "ओं नमो नमः तथा उसके नीचे लाल स्याही में "श्री श्री" लिखा गया है। ९ मां पत्र में जन गरीब के एक पद पश्चात् तुलसी माला धारण में विधि, न धारण में प्रत्यवाय" इसका शास्त्र प्रमाण देकर अपने वचन का सुदृढ़ किया गया। तदनन्तर "छत्र साल" नाम से एक पद, दास गोविन्द के एक पद, भक्तराज के एक पद है। शेष में "श्री चैतन्य नित्यानन्द अद्वैत परम कृपाल" "भक्तराज नाम भणिता से युक्त पद है। आशा है भावुक सज्जन इसका सरस आस्वादन करेंगे ॥

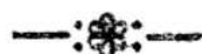
कृष्णदास

गोविंदलीलामृत-भाषा

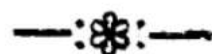
अथ श्रीगोविंद लीलामृत के अनुसार जो जो पद कवित्त दोहा भयो सो लिखत हों ।



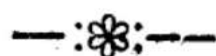
सोवत हुँते प्रीया पीतम दोउ रास केलि कर अति आलस मन ।
गाढ़ालिंगन सुध नहिं तन में मीलित लोचन विगलित भूषण ।।
निस अवसान देखि श्रीवृन्दाजू प्रेरण किने सब पक्षी गन ।
बोलत भये निकुंज भवन के लता वृक्ष चढ़ निज निज शब्दन ।।१।।



शुक सारी मोरन कपोत के बोलन तें जब जगे न प्यारे ।
तब वृन्दा जू प्रेरण कीनी वृद्ध मरकटि परम उदारे ।।
वाके शब्दन ते दोऊ जन होय सशंक उठ बैठे न्यारे ।
सखी गन अवसर जान तुरंत हि अपनि सेवा आनि संभारे ।।



कोउ लीनो पान को डब्यो कोऊ सुन्दर जल को भाजन ।
कोउ विजन दरपन ले लीनों कोउ सारि शुक को पींजरन ।।
एके कर राजत सींदुरोटा एके कर सुगन्ध को भाजन ।
कोऊ टूटे मुक्ता चुन लीन्यो कोऊ कंचको लै पहरावन ।।



एक सखी उगार समेट कै, बांटत भई सबन को ।
एक माला प्रसाद दै सब के मोद बढ़ावत मन को ।।

पीत पिछौरी प्यारी के तन नील निचोल श्याम तन राजत।
चले भय भीत कुंजते दोऊ जन नैनन में निद्रा छवि छाजत।

——:※:——

डगमग चरन वसन सुध नाहिं गुरुजन शंका हृदय विराजत।
जब पहुँचे निज मन्दिर प्यारे तव सब सखि निज गृह को गई॥
पग को शब्द न पायो किनहुँ पौढ़े जाइ श्वासन घर गाजत।
यह लीला देखि नयनन तें प्रेमसखी आनंदित भई ॥२॥

——:※:——

प्रात समैं दरसन उत्कण्ठित आई।
श्री देवी जू वपु धर देखतहिं नंदरानि उठकर सीस नवाई॥
गह्यो उन को कर आनि बैठारी आसन ऊपर भवन देखत भई
अति आनन्द पूछत भई कुशल पति धन की मोह देखावो परमानंद
शय्यागृह आवत भई॥

——:※:——

रानि देवि को लै संग।
ताहि समय सुदामा आदि ले आये भरे उमंग॥
बोलत भये सहित बलदाऊ उठो कृष्ण गोदोहन को समै।
मधुर मंगल सज्जाते उठकर आयो मंदिर अनेक रतन मै॥
जैसे क्षीर समुद्र शेष सज्जा पर लक्ष्मी नारायण सुख पावत।
प्रलय अवसान देखिकै श्रुतिगण स्तुतिकर कर नित्य तीन्हें जगावत

——:※:——

रामकली राग

लाल को जगावत है नंदरानी।
वाम हस्त पाटि पर धर कर वोलत हैं मृदु वानी।
पुत्र स्नेह चुचात पयोधर कंठ को कर उत्तानी॥
दक्षिन कर दै वदन कमल पर उठवत सारंग पानी।

अहो लाल अब भोर भयो है चिरिया सब चोचुहानी ।।
वल वल जाउ चंद मुख ऊपर धोवो लेकर पानी ।
माता वचन सुनत हरि जागे पुनः सोये अलसानी ।।
निज कौतुक गोपन के कारन वाल विनोद दिखानी ।

—:❀:—

बेग उठो प्यारे मेरे हों वलजाऊं वलदाउ आँगन में ठाडे ।
अवर सखा सब तेरे । तेरे विन वछुरा नहीं पीवत,
जतन करत वहु तेरे ।। आलस भरेउ नींदे लोयन लेत जंभाई घनेरे ।
दोउ चरण भूम पर धरकर नयन मिंड देखत सव केरे ।
जननी मुख लख प्रेमसखी प्रभु कीयो प्रणाम सवेरे ।।

—:❀:—

तेताला रागिनी ललित

सोवन देरी माइ ।
नेक मोहि रैनि नींद भयि न नीकी अंग अंग अलसाइ ।।
प्राची दिशा अरुण नहि अजहुँ नहि वोलत है गाइ ।
प्रेम सखी पग लागु मैं तेरे नेक न मोहि जगाइ ।।

—❀—

चौताला भैरों

भोरहि उठ प्यारे सावरे शयन ते गृह के आंगन आवत ।
आगे जननि पाछे देवी वामे मधुमंगल सुख पावत ।।
दाहिने कर में लई मुरलिका अंग अंग अलसावत ।
आप मीले सब सखा प्रेम सखि हास्य करत गुण गावत ।।

—❀—

रामकलि

गोदोहन तुम कन्हैया जावो ।
दुध दोह अपनि सुरभि को बछरन को हु पीवावो ।।

मैं तेरे लिए करत रसोइ जो तुम रुचिते पावो।
प्रेमसखि बलहारि मुख पर वेगहि गृह चल आवो॥

एक बुढ़िया भान कुंवर गृह आई।
सो तो हुति राधा जू की नानी ज्ञान में अति अधिकाई।
जटिलां नाम सुभाव की कुटिला सास प्रिया की कहाई॥
अपने सुख के संपत कारण उनते कहत सुनाइ।
वेज या अपनि कन्या को सूर्य्य पूजा देहो सिखाई॥
याते सब मंगल होइ मेरे यह आज्ञा मोहि कीन्ही हैं माई।
प्रेमसखि वाणि सुन राधा गृह में जाय जगाई॥

लालि कर शयन ते उत्थान।
आज रवि को वार है प्यारि तोहि नाहि न ज्ञान॥
सास आज्ञा वास्तु पूजा अवर कर स्नान।
सब समग्री प्रेम सीख कर पूज सविता भान॥

गुरुजन वचन सुनत हि जागी।
पुन पौढ़ी अंग-अंग अलसानि निद्रा के रसपागी।
नीठ नीठ गह चरण जगाओ प्रेमसखी अनुरागी।
उठ बैठी प्राणन की जीवन राधा परम सभागी॥

रागिनि तोड़ि एकताला

मुखरा कहत विशाखा देख इह बड़ो अचरज है।
इह पीतांबर काल्ह साँझ को तन में हुतो मुरारे॥
सो कैसे याके तन आयो वड़ो खेद है मोहि।
कहधों कुल की लज्जा कैसे रह हैं मेरी सोंह।

इह सुन सखी क्रोधकर बोली बूढ़ी भई आँखन हि है ।
रवि की किरण आ परि प्रात तन ताते पीत श्याम रंग भयी है ॥

चौताला

मज्जन कारण आई हैं श्री राधा जू ललितादिक सखी साथ ।
रत्न जटित चोकी पर बैठी दंतधावन लिये हाथ ॥
जिब्हा सोधनकर कर कीन्हों गंड पै पांच सात ।
मुख मार्ज्जन कर वसन उतारत प्रेम सखी मुसक्यात ॥
प्रथम नवीन वसतर पहराश्रो सुगंधित तैल लगायो ।
अंग अंग उबट प्यारी को कच सोधन जो करायो ।
सीतल अवर सुगंध पानी सो नीके मर्दन करके नहायो ।
अंग पोंछ सूक्ष्म वसतर ते प्रेम सखी सुख पायो ॥

—:ঃ:—

वस्त्र युग्म धराय प्यारी को भूषण वेदी पर ले आई ।
अगुर धूम ते केश सुखाय कर कंघइ करके पाटी बनाई ॥
श्रीकृष्ण दत्त चूडामणि देकर सुन्दर डोरी वेणी गुंथाई ।
वो डोरी फौंदा की शोभा कहा कहुँ कछु वर्णी न जाई ॥
ता पाछे घघरा अवर सारी जर कसि चोली लाल पहराई ।
मांग सिंदूर भाल में चंदन कुंकुम दैके तिलक बनाई ॥
कुच कपोल पै चतुः सम तैं पत्रावली सुंदर सुखदाई ।
कटि में छुद्र घंटिका राजत करणा तरौण अति छवि छाई ॥
नासा में नथ वेसर सुधा नेनन कज्जल गल हार छिपाई ।
कंठ कूप के निकट जो जुगनी हीर की चम्पाकली भाई ॥
स्तन उपर हारावली राजत गोस्तनाभिध अवर गुछक माई ।
कृष्णदत्त गुंजावली मुक्ता रत्नन की वहुविधहि वनाई ॥
भुज में वाजूबंध वहुरा हाथन कंकन पहुँची भाई ।
अंगुरीन में मुद्रिका जो दीनी वाके नामांकितारि माई ॥
पग में नूपुर पाइल पैंजनि जा को शब्द कृष्ण सुखदाई ।

पाद अंगुरीन में अनवट विछवा जाको देख व्रह्मा सकुचाई ॥
लीला कमल हस्त में दीनों प्रेम सुखी दर्पण दिखराई।

—❀—

प्रभु गए जब गोदोहन को तब नंदरानी व्याकुल भयी।
दासिन को बोलाय कही तुम करो भोजन की सामग्री नयी।
भूखे श्यामसुंदर बलदाउ आवत होंगे दोह कै गाई।
खोल भंडार तुरत ले जावो शाक मूल पत्र अवर मही ॥
दाल कनक चावल अवर वेसन अद्रक पीठी अवर मखई।
हरदि शोंठ जीरा अवर हींगु खट्टा शर्कर अवर माखन दही ॥
घी अवर तेल गरोहि पीसी लौंग जायफल अवर कपूर।
दुध जो व्रजपति भोर दूह कर प्रेमसखी राखो हैं दूर ॥

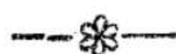
—❀—

तबहि बोल लयी वल माता ताते कहत अतिहि विलखाइ।
हे सखी देख चपल यह कन्हैया वर्जत हूँ तउ वन को जाइ ॥
खान पान की कछु सुध नाहि गाइन संग बन बन भ्रमाइ।
ताते रहत सदाहि दुर्बल वाहुयुद्ध वाको अतिहि सुहाइ ॥
काल्ह जो तुम भोजन करवायो या में वाकी रुच अधिकाइ।
सोइ अन्न व्यंजन तुम सगरे प्रेमसखी संग करो वनाइ ॥

—❀—

दैवयोग ते आयि,
नंदगृह कुंदलता सुभद्र की जाया गुण में अति अधिकायि।
आयि प्रणाम किऐ रानि को दै असीस वाते कहत सुनायि।
ये वेटी मैं ऐसो सुनो है देवी के मुख गायि।
राधा को दुर्वासा मुनि ने यह वर दीनो है रि मायि ॥
वाकी करी रसोइ जो खाय है ताकी वैंस बढ़ायि।
याते मैं चाहत हों वाको अपने घरहिं बुलायि ॥

ताते तु जटिला पैं जाके प्रेम से लाव सब सखी मिलायि ॥
तब कहि कुंदलता ये जू तुमरी आज्ञा सीस पैं मेरे ।
अबहिं जात हुँ जटिला के ढिग लावत हूँ मैं वाह सवेरे ॥
जा पहुँची जटिला के घर में कीयो प्रणाम घनेरे ।
कहत भयी यशोदा की विनति प्रेम ते चरण वंदो है तेरे ॥
यह सुन कर जटिला बोलत भयी वहु मेरी अति ही सुकमारी ।
कृष्ण चपल व्रजलोग चवायि यातें शंका मो मन भारी ॥
पूर्णमासी अवर यशोदा जू की आज्ञा करणी हैगी मोकी ।
तेरो गुणसब व्रज विख्यात् है तातें सोपत हुँ मैं तोको ॥
पै इतनो कीजो प्यारी तृ कृष्ण की दृष्टि पर नहीं यापे ।
यशोमत वचन निबाह करा कैं वेग लें आव वाह तू मोपे ॥
याको सूर्य पूजा करणी है तुं जानत हेरी माइं ।
बेग ले आव जामे विलम्ब न होवे यशोदा को समझाइ ॥
कुंदलता बोली येजू तुम मन में शंका नेक न आन ।
याको छाया हु नहि आखन देखेंगो कभु कान्ह ॥



नंदभमन में आयी श्रीराधिका कुंदलता के संग ।
आय प्रणाम कीयो यशुमत को मन में बड़ो उमंग ॥
देखत उठकर गैंर लगायी और बोली मुसक्याय ।
कह बेटी तोहि देर कहां भयी मन में मत सकुचाय ॥
मैं तो अपनी वधु ही जानत मोतें कहाँ छिपाव ।
तब बोली प्यारी येजू मैं पथ भूल वन में विलखांव ॥
दैवयोग ते सखी एके आयी ताने मोकों दीयो बताय ।
अब जो आज्ञा करों सीसधर जामे तुमरो मन सुख पाय ॥
हँस बोली नन्दरानी तब हि अबेर भयी करो वेग रसोयी ।
सखियन संग सव लैं मेरी प्यारी जामे कन्हैया रुचिते खाय ॥

वस्त्र उतार सखी कर दे कर हाथ पाव धोय वल जननि पाव।
जाय प्रणाम कीयो प्यारी ने वहुविध सीस नवाय॥

—❀—

वैठी करण रसोयी प्यारि। जोइ जोइ आज्ञा करी वल जननि तुरत कीयो है सोयी॥ दाल भात व्यंजन वहु कीन्हे और विविध पकवान। जाके वास सुवास हि पावत तृप्त होत हैं प्राण॥ इतने में यशोदा आयीं। चितवत भयीं सब की मांही कौन कहा कीन्हों सो मोको दिखाय देव॥ सामग्री देखकर मन में आनन्द होय। कहत भयी थार सज भोग अव लगाय देव॥ दासोन को वुलाय कहो वेग आसन चौंकी धरो पारस कर सामग्री के ठाठ दरसाय देव। भोग जव उतरे तव वाही को लै कै थोरो थोरो पावन मे सव वरताय देव॥

—❀—

पारस जब भयो तव टेर लीये राम कृष्ण
सखन संग आवो लाल भोजन की वेर है।
भोजन कर जावो वेग गइया चरायवे को
मन में मत खेद करो नाह कछु देर है॥
भोजन में बैठे लाल घुंघट कर देखत वाल
मन तो भयो विहाल थोरो सो पाय उठ वोले है माय हे।
गाइन को देर भयी अव तौ मैं नाहिं रहों
छाक तुम और दिन ते वेग ही पठाय हो॥
मन में अति खेद पाय वोली यशोदा माय
तेरो तो मन सदा वनहि मे रहतु है।
छाक तौ पठावत हुँ तउ तेरो मुख मलीन
नहि जानु छाक लै तु नित्य कहाँ करतु है॥

—❀—

बन की इछा जब भयी लकुट वेणु लै हाथ।
आये माता के निकट बल दाऊ के साथ॥
माता ने बैठाय कै सुमरे श्री भगवान्।
बांधी रक्षा पोटली दीबो दिठोना कान॥

—❀—

बड़े बड़े योद्धा वुलाय कै कहत भयी
वालक हैं चपल दूर जाने तुम दीजो मत।
जो तो न माने तोले आवो मेरे ढिग
काहु को संकोच मन में तो कीजो मत॥
वुरो भलो कहै तोउ वालक अवोध जान
क्षमा कर चित्त में नेकहु तो खीजो मत।
बालकन कों बुरी दिष्ट देखै जो कोऊ सो तो
नारायण प्रताप ते बहुत दिन जी जो मत॥

—❀—

मात पिता शीर नायकै चले लाल हर खाय।
सखा गाइ आगे कीये शंगा वेणु वजाय॥
दुहत दुहावत गइया मोहन कर लीने है।
कनक दोहनि बैठे हैं अध पइयां॥
सुवल आदि सव सखा टेर कै वोलत हैं मृदुवाणी।
तुम घर होय आवो मेरे प्यारे करो भोजन सुख दानि॥
मात यशोदा द्वारे ठाड़ि टेरत राम कन्हैया।
वडी वेर की भयी है रसोई व्यंजन जात सीरैया॥
इतनी सुनत वेग चल आये वैठे भोजन महीया।
सखन सहित प्रभु जेवत जेवावत निरख सीतल वल गइया॥

—❀—

थोरे दूर जाय फिर देखत भये व्रज की ओर
आवत है मात पिता अतिहीं अकुलाय कै।

तब तो वाही ठौर ठाडे होय कर वोलत भये
मन में तो खेद पायो नेक मुसकाय कै॥
आप की ही आज्ञा ते जात हुँ मैं वन को
और कहा आज्ञा सों करों मनलाय के।
माता वोली लाला एक वात तो भूल गई
ताही के कहवे को आयी हों ध्याय कै॥

—❀—

लाल सुनों मैं कंस ने पठये हैं वहु चोर।
तुम जिन भूल हु जाइयो काली दह की ओर॥
माता को आश्वास कर गये लाल हरखाय।
यशोमति आयी गेह में लीनि वधू वुलाय॥
भोजन वहु प्रकार के अपने हाथन लाय।
सखीन सहित भूषण वसन दै कै कीयो विदाय॥
जटिला देख आनन्द होय लीनि गरे लगाय।
वोलि वेटी दिन चढो लै सब पूजा अंग॥
सूरज पूजन जाऊ तुम कुंदलता के संग।
तुरंत ही प्यारि सौंज दै सखीयन के कर मांह॥
आयी श्री राधाकुण्ड पै जहाँ वैठे हैं नांह।
सखीयन ने एकांत में कीन्हौ है शृंगार॥
आयी जव प्रभु के निकट रच्यो द्युत चौसार।
प्यारि ओर ललिता भयी कुंदलता प्रभु ओर॥
वाजी मुरली हार रख खेल मचायो घोर।
वाजी हारी लाडली हार जों चाहत लैन॥
ललिता ने हुंकार कर कहे जो मीठे वैन।
तुम तो स्वेछा चारि हो ग्वाल बाल के मित्र॥
या को पूजा करनी है मत छु करो अपवित्र।
वाजी जीति लाडली तब तो ललिता दौर॥

मुरली लै भाजत भयी केल कुंज के श्रोर।
विन मुरली ब्याकुल भये गये वेग उठ धाय ॥
इत प्यारि मुसक्या कै कुंजन गई समाय।
ललिता पायी जब हरि लीनि कंठ लगाय ॥
वोले इह तो वंशिका है मेरी सुखदाय।
या विन मोको चैन ना वेग तु देह वताय ॥
ललिता ने तब सैन तें कहो वह मोपे नांह।
प्यारि के ढीग जाऊ तुम मत खीजो मन मांह ॥
गये कुंज तब लाडले प्यारि कीनो शयन।
दुहुँ मिल नाना भाँत के प्रेम सखी कीयौ चैन ॥

इति श्री मध्यान्ह लीला समाप्तम्

अथ अपरान्ह की तथा सायंकाल की लीला के पद

कवित्त दोहा लिखत हुँ—

अरि तु कब की गयी द्विज लावन ।

सूर्य्य अस्ताचल जान उद्यत भयो विन पूजा कैसे घर जावन ॥ कहा व्रज में कोऊ विप्र वसतु नहि कै तुं सोय रही सुख पावन । सास है मेरी जटिल जानत अवहि श्राय है मोहि खिजावन ॥ सखी वोली सुन स्वामिन मेरी चंदावली कीन्हो उद्यापन । ताते विप्र गये सब तहां हि कोउ न भेटो मोहि श्रभागिन ॥ नीठ नीठ यह छोरा पायो याको लै करो सूर्य्य पूजावन । चलो गेह तुम स्वामिन मेरी सीतल करो नयन सुख दावन ॥ १ ॥

—❀—

भले हि वने आज द्विज मेरें लाला ।
यज्ञ सूत्र पीतांवर राजत कण्ठ माल माथे तिलक विशाला ॥
आसन पोथी कांख विराजत हाथ सुमरणी गल वीच माला ।
प्रेम सखी श्रद्भुत व्राह्मण लख आदर तें पूजन कीयो वाला ॥२॥

सकल ब्रज धूम मची है आवत है गोपाल ॥
बज शृंग वेरग और डफली गोरज उडत गुलाल।
व्रज वनिता घूंघट पट देकर वोलत वचन रसाल ॥
पिचकारी कटाक्ष छूटत हैं तन मन करत विहाल।
सुन्दर वचन मिठाई दीनी फगुया दीयो मुसक्यान ॥
यह सुख निरख आनंदित भये है, प्रेमसखी के प्राण ।।३॥

—※—

संध्या के समय श्रीनंद जू के गृह मांह
विथारू की सौंज यो प्यारी ने पठाई हैं।
लै कै चलि सखी सब माथे और कांधे पर
नाना पकवान और ऋतु की मिठाई हैं॥
दर्शन की भूखि और सुखी विरह तापते
ध्यान करत रूप गुण गावत हि आई हैं।
सामग्री सोंप आय देखो गोशाला में दुहत दुध
प्यारे चंद्रके चहुँ ओर मानो तारे सी छाई हैं ॥४॥

—※—

गइयां लै आये जब द्वार पर दोउ भइया
मैया ने वेग आय आरति कीन्ही है।
अंचराते पौंछ मुख अंग अंग निरख सब
प्रेम भरी वाणी ते आशीष वहु दीन्ही है॥
पुछत भयी कन्हया तुने छाक नहि खाइ किधों
दूर के भ्रमण ते तेरो मुख मलिनी है।
याहिते नित्य मैं वर्जत हुँ प्यारे तुम दूर मत जावो
दूर दूर जाय मोको दुःखित वहु किन्हि है ॥५॥

—※—

सखी एक वोली कहा दुहन वारो नाहै कोउ
सगरे दिन फिरे नेक चैन कीयो चाहीये।

आवो करो मज्जन और अंजन मन रंजन
पहरो आय वसन जाते तन सुख पाईये ॥
रोहणी मैया ने करके रसोइ आछी श्रीमन्
नारायन को भोग हु लगाईये ।
वलहारी लाल तेरो जानत हुँ कौतुक मैं
नेक मेरी वात सुन वेग चल आईये ॥६॥

—※—

वैठी हो कहा प्यारी दिन तौ अवसान भयो
देखो नेक सूरज तो अस्ताचल धायो है ।
वेग उठी प्यारी लगी सामग्री करवै मे व्यग्र
होय शीघ्र करो सखीयन समुझायो है ॥
इतने में सूरज की छाय जो दृष्टि परि
सखीयन को मुख देख किंचिन्मुसक्यायो है ।
सीतल सकुचाय वोली विस्मय कछु
नाहै प्यारी दयी मारे मेह माह झूठी वनायी है ॥७॥

—※—

सखी को वचन सुन आय कीयो मज्जन,
और चौकी पै वैठ सुन्दर वसन पहराये है ।
माथे पर तिलक भाल भूषण अनेक भांत,
कण्ठ और हृदय में जतन ते धराये है ॥
देखो तब सखन और तामे जाको नाह पायो
ताको तो प्यारेन टेर कर बुलाये है ।
भये जब एक ठौर तब तो श्रीदाऊ ले,
हरखते वेग भोग मंदिर में आये है ॥७॥

—※—

मज्जन कर बैठी आय कंचन की चौकी पर,
सामग्री छटा देख बहुत सुख पायो है।
वन के श्रम ते जब नेक विलंब जानि,
तब तौ सखी ने सैन ते सु चायो है॥

—※—

नंदभवन में जेंवत श्याम।
दहने श्रीवलराम विराजत वामे हैं सुवल श्रीदाम॥
मधुमंगल सन्मुख हैं बैठे और सखा वाके दहने वाम।
मात रोहिणी देन रसोई यशोमति परसत हैं पकवान॥
पहले जो श्रीराधाजू पठायो सरस सिधानो और मिष्ठान।
ता पाछे घर को सामग्री स्वाद स्वाद कर खात हैं कान्ह॥
मात दृष्टि वंचन कर प्यारे बाँट बांट कर देत सुखधाम।
इह सुख निरख सीतल भये नयना पूर्ण भये सब मन के काम।

—※—

माता तें पुछत यह सामग्री तुमने करी,
किंवा काहू और ते तुमने मगायी है।
माता बोली लाला एक राधा नाम गोपी है,
ताको दुर्वासा ने वर इह दायी है।
जो कुछ करोगी पाक सोतो अमृत तुल्य होगो,
और जो कोउ खाय ताकी वयस बढ़ायी है।
ऐसो सुन नित्य हि वाते मैं यतन कर,
आछी नीकी सामग्री यह सब मगायी है॥
तब वोले मैया धन्य वाके हैं मात पिता,
धन्य वह पुरुष जाकी घरणी कहायी है।
माता को किंचिन्मुख मलीन जब हि देखो,
तब तो मुसक्याय कहत कन्हाई है॥
माता तुम खेद कछु मन में तो जिन करो,

याहु ते नीकी वधु तेरे घर आई है।
सुनि मुसकाई मात हृदै वड हरषित,
तब सचु मानु तेरी सरस कहाइ है ।।८।।

—※—

भोजन कर प्यारे आय बैठे जब माता ढिग,
याचक को पात्र तब दासी लाय दीनो है।
आप खात औरन को बांट बाँट देत,
वहुत आदर ते पान खाय नेक शयन कीनो है ।।
क्षण केतेक कर बिश्राम नंदजू के सभा चले,
अपने सब सखान को संग में लीनो है।
अवसर पाय सखियन ने माला और बीड़ी दयी,
संकेत की ठौर को प्रश्न जो कीनो है ।।
यशोदा के निकट पाय लाग चली जब,
तव हि धनिष्ठा ने सामग्री लाय दीनी है।
लै कै चली आनंद भरी कृष्ण भुक्त शेष सहित,
प्रेमसखी श्रीमति राधाजू के चरणन में आय समर्पिनी है ।।१०।

—...—

सभा में राजत हैं नंदनंद।
जैसे पूर्णिमा की रात में तारन के विच चंद ।।
वंदीजन और गणका कत्थक गावत गुण के वृंद।
तीन को दान मान दीयो सीतल पूर्ण परमानंद ।।११

—※—

[illegible]ज मंदिर जेवत प्यारी।
[illegible]लिता विशाखा दहने वामे और सखी सब सारि सारि।
[illegible]थम श्रीकृष्ण शेष को परसो ता उपरात यशोदा की पठारि ।।
[illegible]वाद स्वाद कर पावत रुचि ते मन में अति आनंद भयो भारि।

सीतल सखी आनंदित होय कर लीयो अवशेष अपन पो वारि ॥१

—※—

प्रौढ़ी माई लाडली सुकुमार।
अतिहि निद्रावश भयी प्यारि भूपण वसन उतार॥
सैन वसतर ओढ़ प्यारि बोलत करे उन हार।
तुम हु जावो निज निज मंदिर शयन की है वार॥
तब गयी सब सखी सयानि सोयी दै दै द्वार।
और सखीयन को कहत प्यारि कर कृपा वहु वार॥
तुम हुँ जावो करो भोजन होत है अवार।
तब गयो सब सखी मंजरि भोग मंदिर द्वार॥
सखी सीतल चरण सेवत होत है वल हार॥१३॥

श्री गोविन्दलीलामृत की भाषा सम्पूर्ण।

राग विहाग

भरोसो इन चरणन को मेरे।
जीन चरनन की रज की वाँछा ब्रह्मा करी घनेरे॥
शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीनी उद्धव संत हु मांगी।
सोई चरण श्रीगुरु प्रताप ते सेवत सखी सभागी।१४

———

दीनवंधु प्रिय नाम तिहारो।
मोतें दीनन और जगत में तुम सो नाथ से और नियारो।
यद्यपि योग्य नहि हों स्वामी तद्यप निज महिमा को विचारो॥
दीनानाथ कृपाल दयानिध सीतल को संकट निर्वारो॥१५

अथ और कवित्त पद दोहा जो भये सो लिखत हैं—

प्रात हीं चली नार लै दही वेचने को पहुँची जब वाहि
ठौर जहाँ सुख करत भयो।

मन तो विकल भयो नयनन में रूप छयो
कौन कहै दही लो कृष्ण लो कृष्ण लो कृष्णला कहत भयी ।१६।

—※—

फूलन ते वेणी गुही फूलन को वंदी वेना
फूलन को टेढी और फूलन के छहरा ।
फूलन की कंठ सीरि फूलन के वाजु वंध
फूलन की पहुँची और फूलन के गजरा ॥
फूलन को सिंहासन और फूल को बितान तनो
फूलन पिछवायी और फूलन के दंडरा ।
सीतल सुगंध पाय इते उत डोलत प्यारे
मानो फूल सरोवर में फीरत है भ्रमरा ॥१७॥

—※—

काहु ने पुछो कहो वैष्णव को चिन्ह कहा
जगन में वैष्णव सब ही कहावत हैं ।
तहां कहत भई या प्रथमतो शुद्ध दीक्षा
पाछे वाके साधन में चित्त जो लगावत हैं ॥
कंठ मांह तुलसी माल तिलक हु विराजे भाल
विना निजेष्ट शेष कछु न पावत हैं ।
मुख में विराजै नाम हृदय में सरूप श्याम
ऐसे तो वैष्णव को देव कर गावत हैं ॥१८॥

—※—

यात्रा में विघन सोतो मेरे हो पाप फल,
ताकी तो चिंता कछु नाहि मोहि प्यारी जू ॥
और हु जो कछु शेष होय सो शीघ्र कीजे,
हो तो समर्थ श्री कीरत दुलारी जू ॥
जर जर भयो देह सर्व इंद्रिय शिथिल भयी
कैसे धाम पाऊं यह चिंता मोहि भारी जू ॥१६॥

तेरो गुण नाम गान करत रहुँ रैन दिन,
सीतल की विनति सुनो श्री मद्विहारी जू ॥

—:❀:—

नाम हि बेद और सकल शास्त्र नामहि
योग और यज्ञ फल नामहि में राखो है।
नाम हि मंत्र और यंत्र हु नाम हि
नाम और नामी को एक कर भाखो है ॥
नाम ही ते मुक्ति और भुक्ति हि नाम हिते
संसार रूप रोग की औषध कर आखो है।
ऐसो नाम छोड़ जों विषय में यतन करै
अमृत को छाड़ मूढ़ विष ही को चाखो है ॥२०॥

—:❀:—

नाम ही संपत् और नाम हि भवन भूम
नाम ही भूषण और वसन हमारे हैं।
नाम को प्रताप जान छाड सकल साधन को
केवल एक नाम ही को चित मांह धारे हैं ॥
नाम के प्रताप सब सिद्ध भये कार्य्य मेरे
नाम के प्रताप सब शत्रु विडारे हैं।
नाम की महिमा तो कहवे को को समर्थ
नाम के आभास ही ने कोटि पापी तारे हैं ॥२१॥

—:❀.—

धिक जीवन जो पै नाम न जानो।
श्रीमद्भागवत श्री शुक भाषित जो न सुनो जो पै नाह बखानो ॥
जाके निस दिन तब गुण चिन्ता सोइ सुकृति सोई परम सयानो।
सीतल तू मत विसरे क्षण हू ना जाने कब होय पयानो ॥२२॥

——❀——

भज मन राधिका के चरण।
जाहि सुमरे वेग छुटत भव को आवागमन।
जोही सर्वाभीष्ट दायक सुख करण दुख हरण ॥
भक्त पालक दुष्ट हालक पतित के उद्धारण।
रसिक सेखर नन्द नन्दन तिनके मन हरण ॥
यहि निश्चय जान सीतल करत है अस्मरण ॥२३॥

—※—

सोतल की विनति तो इही है।
छाड़ सकल साधन को स्वामिनि तब चरनन की शरण गही है ॥
क्षीण क्षीण क्षीण होत मेरि काया यह चिंता मोहि नित्य ही रही है।
नाम प्रताप धाम निज दीजय अव तो विलंब न जात सही है ॥१॥

—※—

उद्धव सन्देश के श्लोक के भाव को कवित्त

याही दिन उद्धव मैंने मथुरा को गमन कीनो,
ताही क्षण द्रुमलता सूख सब गये है।
आकस्मिक एक दिना प्यारी आयि वाही ठौर,
देख वृक्षन की ओर चिंता मन भये है ॥
वाही समय वंशी वजायी काहु गोप ने,
भनक परी कानन प्राण व्याकुल अति हुये है।
हृदय में रूप छयो नयनामृत कूप वह्यो,
ताही ते अद्यावधि वृक्ष सब नये है ॥१॥

—※—

किंनु संधेय मस्मिन्—

जाने दै री ऐसे कपटी ते कौन वोले।
येरी सखी जब लग वाको काम न होवे ॥
तव लग तो मेरे पाछे ही डोले।

काम भये सुन मेरी सजनि।
आँखें न देखै नाहि मुखहु ते बोले ॥१॥

—※—

श्री प्रियाजू की कौमारावस्था वर्णन—

वंशी की भनक जब आन परै कानन में,
तब ही तो प्यारी अति अकुलात है।
सखी संग लै कै आय ठाडी भयी द्वार पै,
दर्शन उत्कंठा पुलकित सब गात है॥
कान्ह जब आये तब तृप्त भये नयन प्राण,
गुरुजन को देख नेक सकुचात है।
भाज गई भवन मांह उपमा तो और नांह,
मेघ के आये जैसे चन्द्र छिप जात है॥

—:※:—

श्रीगोपकान की दशा सांयकाल की—

वन ते जब चले लाल संग लीये ग्वाल वाल,
गाइन के यूथ चले कारे पीयरे गौर गौर।
वछराहु चले हैं कुदत और रांभत इत उत,
भाजत तीन्है पकरत है दौर दौर॥
शृंग वेणु मृदंग ताल वजावत है ग्वाल वाल,
कृष्ण गुण गावत हैं ठाढे होय ठौर ठौर।
ब्रज की किशोरी समय जान आयी छाड़ गृह,
काजन को फूलन की बरखा करत भयी पौर पौर॥१

※ इति सीतलदासजी के पद सम्पूर्ण ※

अथ शिवपददासजी के पद

श्रीराधावल्लभो जयति ॥

सौन्दर्य्यं स्मरकेलिपौरुषरसं गायन्ति ता सुस्वरं
वीणा-वेणु मृदङ्गतालमहतीं संपादयन्ते भृशम् ।
राधा नृत्यति दक्षिणे रसवती वामे च चन्द्रावली
मध्ये श्यामलसुन्दरो रसकलामुद्दीपयन्मुत्तमम् ॥१॥
तप्तकाञ्चनगौराङ्गीं राधां वृन्दावनेश्वरीम् ।
वृषभानुसुतां देवीं प्रणमामि हरिप्रियाम् ॥२॥
पद्मावली विरचिता रसिकैर्मुकुन्द-
सम्बन्धबन्धुरपदा प्रमदोर्मिसिन्धुः ।
रम्या समस्ततमसां दमनी क्रमेण
संगृह्यते कृतिकदम्बककौतुकाय ॥३॥
यदपि मत्कविता गुणवर्जिता तदपि साधुसुखाय भविष्यति ।
इह निर्मित-मंद् यदुदीर्य्यते हरिकथा कलिकल्मषनाशनी ॥४॥
रे रे खलाः शृणुत मद्वचनं समस्ताः
स्वर्गो सुधास्ति सुलभा न तु सा भवद्भिः ।
कुर्म्मस्तदत्र भवतामुपकारिकारं
काव्यामृतं पिबत्त तत्परमादरेण ॥५॥ इति प्रतिज्ञा ॥

मंगलाचरणम्—

नित्योत्सवो नित्यसौख्यं नित्यश्रीः नित्यमङ्गल इति ॥
वन्देऽहं परमानन्दं सच्चिदानन्दविग्रहम् ।
श्रीगुरुं प्रियायुक्तं श्रीप्रेमानन्दपरायणम् ॥१॥
रसिकानन्दतत्वज्ञं श्री विहारपरायणम् ।
राधाप्राणसमं प्रेष्ठं मोहनं मुरलीधरम् ॥२॥

रासक्रीड़ापरिश्रान्तं वदनाब्जमधुव्रतम् ।
किरीटकुण्डलधरं वनमालाविभूषितम् ॥३॥
पीताम्बरं लसत् श्रीमन्नानाकेलिपरायणम् ।
कन्दर्पकोटिलावण्यं चन्द्रकोटि सुशीतलम् ॥४॥
रविकोटिप्रतीकाशं वायुकोटिमहाबलम् ।
नानाभरणशोभाढ्यं नानाक्रीड़ापरिच्छदम् ॥५॥
तं गुरुं वल्लवीकृष्णं नत्वा भक्तया च श्रीशिवम् ।
राधाकृष्णात्मजोऽहं च राधाकृष्णपरायणः ॥६॥
ब्राह्मणानां वैष्णवानां दासोऽहं दासतत्वविद् ।
गौडेश्वरकुलाम्भोजे श्रीमत्स्यामलविग्रहः ॥७॥
परमानन्द–रसिको हरिदेव–महाप्रभुः ।
तत्पदेऽसौ दासमतिः शिवांघ्रदासनामकः ॥८॥
श्रीगुरोः कटाक्षपातात्करिष्ये श्रीपदावली ।
रसज्ञानां सुखार्थाय रासरागमनोहारी ॥९॥

—❀—

जय जय स्यामा स्याम हरे, श्रीमत्स्यामा स्याम हरे।
श्रीपति पद पद्म पराग धरे रास रंगीली स्यामा स्याम हरे॥
शिव पद वदन मधुमादक प्रिया प्रीतम के हास भरे।
षट्पदी सुखपदी आ वचन दिवनी छवि रास विलास परे॥
श्रीस्यामा स्याम चरण मन दीनो और नही कछु जानिके।
श्रीवृंदावन चिंतत दिन निशि प्रेम परम व्रत ठानिके॥
श्रीहरिदेव पदकमल चित लायो परमानंद प्रभु मानिके।
श्रीमत्प्रिया स्याम मन मोहन युगल स्वरूप पैहिचानिके॥
श्रीहरिदेवदास मति विलास रंगीलो आयो शरण मन मानिके॥

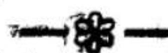
—❀—

भज श्रीसंकर्षण पद पद्म परागं।
अलिकुलमंडित मुनिमननंदित नागकुमारि अर्चित अनुरागं॥

मृणालगौर नीलांवर दुकूल कर्णमूलैककुंडल नवरागं।
नयन विशाल मत्त अलशाते युग भुज दंड रसालं॥
चंचल-भृकुटि-अनंग वढ़ावत कंवुकंठ वनमालं।
पुष्ठि नितंव पीन वक्षस्थल नाभि गंभीर-विशालं॥
गूढ़ जंघ जानूद्वय सुंदर गुल्फ पाद तमालं।
मणि नख प्रभा प्रकाश ज्ञान घन भक्त चित्त अभिरामं॥
लटपटि पाग ग्रीव मुक्तावली कंकण वलय क्रीट मणि स्यामं।
कटि किंकिणि नूपुर घन घोरनि श्रृणत अंग सुख वामं॥
कंचुक ललित विचित्र पुष्प रचि नीलदुकूल कटि धामं।
हल मूशलकी टेक विराजत संग सखा घनस्यामं॥
क्वचित् विहार वनिता के मधि मत्त चित्र अतिकामं।
श्रीमत्पद शिवपद की वानी श्रीवलि राम विहारी॥
याचत दीन श्रीपदारविंद युग श्रीगुरु पद वलिहारी॥२॥



रे मन भजौ स्यामा स्याम।
छाड़ि जग व्यवहार छूयो दार कुल धन धाम।
याहि नाहि कोऊ अमर मूरत्ति सकल ग्रसे अहि काम॥
रैनि निद्रा स्वप्न मैथुन हरत्यायु चारो याम।
दिवस अर्थ इहां वीतत कुटुंव पालन काम॥
दारापत्य कलित्र वंधु प्रिय आत्म सैन्य सुख धाम।
देखत तिनैं प्रमत्त नाशकौ नहीं देखत याम॥
कालव्याल त्रिकाल ग्रसे भजन नहीं श्रीराम।
याहि सुमिरे दुःख नाशत मिलै शिव विश्राम॥
विन स्वाम स्यामा औरु नाही त्राण कारण धाम।
मम सर्वस्व शिवांघ्रि सुख श्रीप्रिया प्रीतम नाम॥३॥



आये बसंत संत मन रंजन स्यामा स्याम वनो एक जोरी।
इत पीतांबर नवल नीलांबर मुकुट चंद्रिका ढलकनि ओरी॥
कर कमल गल वांही दे करि मंद त्रिभंग ललित गति थोरी।
किंकिणि कंकण नूपुर राजत कटि तट कछनि मोहन मति मोरी॥
उर वनमाल विशाल लाल के मुक्तमाल वृषभानु किशोरी।
सखी गुलाल लिये ढिग थाड़ी कर पिचकारी खेलत हो होरी॥
उड़त गुलाल अवीर अरगजा रंग सौं रंगी स्याम लियोरी।
मानो सजल अंबुद पर अरुण घटा दामिनि संग छोरी॥
झमकि जवै पद धरति लाडिली शिव पद छबि वरनी नहि थोरी।१।

—※—

श्रीवृंदाबन रास भूमि मैं राजत स्यामा स्याम।
सदा किशोर वयसके दोऊ छबि वरनत अभिराम॥
सदा वसंत रहति श्रीवृंदाबन पुलिन सुमन छवि दाम।
शीतल मंद सुगंध पवन जहाँ श्रीनित्य विहार को धाम॥
राका शरदेंदु पूर्ण द्युति निरखि नित्य उत्कर्षत काम।
श्रीव्रज मंडल रास नृत्य मैं राजत श्रीघनस्याम॥
द्रुम विहंग स्वर सचराचर रटत श्रीराधा नाम।
वंशीध्वनि शुनि मगन होय तजत गेह को काम॥
देह स्नेह कुल गहे तजि दर्शित प्रिया व्रज वाम।
धन्यलता धन्य ब्रजजीवन धन्य सवन के काम॥
धन्य धन्य तम श्रीगुरु पद कमल पराग शिव धाम।
उन के प्रताप ते शिवांघ्रि सुख पाये स्यामा स्याम॥२॥

—※—

श्रीनंदलाल गोपाल वाल संग खेलत होरी।
श्री राधिका लाल किशोरी लाल गुलाल लिए वृषभानु किशोरी।
चंपावर्ण लाडिली राजत श्रीघनस्याम स्याम वर मोरी॥

देखत सुनत न जाकौ निगमागम सों ब्रजरास माधुरी योरी।
नृतत लाल विशाल वाहु धरि वंशीध्वनि घन घोरी ॥
ध्वनित वंशी जगत प्रसंशी हरि अधरामृत वौंरी।
श्रीराधा राधा ध्वनि सुनि जामै वंशीतान मान रस वौंरी ॥
कहा लौ कहौं कृपाल लाल श्रीप्रियालालजी दास मति विलास
रास रंगोली योरी ॥६॥

—❀—

विलसत दोऊ रंग भरे।
एक वाहु प्यारी गलवाही दूसरी वंशी धेन धरे।
मूकुट चंद्रिका सीस विराजत मानौ रवि शशि उदय करे ॥
नील पीत सारी स्वरंगतन कालिंदी तट कदंव मूल खडे।
ललितादिक सब सखी झुंड मैं बिहरत स्यामा स्याम वरे ॥
गावत राग अनुराग रास को वनचारी मृग विवश करे।
भ्रमर पंक्ति संग डोलत बोलत वदनांबुज मधुस्वेद झरे ॥
श्री शिवांघ्रि दास विलास प्रिया प्रियतम को वर्नो वुद्धि अपार।
सार को सार सर्वश्व उमावल्लभ को श्रीगुरु प्राण अधार ॥७॥

—❀—

भानु के उदय मैं प्रघटी व्रषभानु नंदिनी।
सर्व गुण निदान ज्ञानखानि मान राग रस रंजनी ॥
सर्व व्रज कमोदनि वन तन मन स्याम घन चकोर नयन चंद्रनी।
सीम सुख विलास राशि वास पियारे पास रासोल्लास सहास
कंदनी ॥
श्रीवृंदाबन लता कुंज भ्रमर पूंज भ्रमत धुनि रासभूमि मंडनी।
श्रीमत्स्यामा स्याम पूर्ण करो सर्व काम मेरे हृदय कमल पर
बसी वृषभानु नंदिनी ॥८॥

—❀—

आजु बली बनी श्रीराधिका नागरी ।
नूपुर चरण पद जेवर सुंदर मणि नख प्रभा प्रकाश आगरी।
अरुण वरण घेघरो स्वहायो सुर्ण मेखला कटि प्रदेश सागरी।
हारावली विच कुच कुंभ युगन के कंठ श्रीकंवुकंठानुरागरी।
कर्ण फूल कुंडल झलकत कपोल विच अधर अरुण हास बावरी।
नयन विशाल अरुण मत्तवारे कुटिल अलक भ्रकुटि सिंदूर मागरी।
नासा अग्र वेसरि को मुक्ता विलसत चिवुक सेव भागरी।
अलक कपोल बीच पत्रावली मुकुट चंद्रिका झलक मागरी।
श्रीशिवांघ्रिदास विलासी श्यामरो निरखि प्रिया को भयो बावरो।
कर वंशी लीनी जव सुंदरि प्रघटो मान अनुराग आगरो ॥८॥

—❀—

जय जय यशोदानंदन की ।
ललित त्रिभग स्याम घन सुंदर मूर्ती आनंद कंदन की।
नील पीत सारी स्वरंग तन मुख इंदु चंद्रिका मंडन की।
मयूर मुकुट कुंडल की झुकन अलकावलि जग पंदन की।
अमल कपोल नयन अलसाते भ्रकुटि चाप दुःख खंडन की।
अधर अरुण दंतियन की ज्योती नासा शुक मुख रंजन की।
चिवुक सेव कंठ कंवु पर राजत माल मुक्ता-मणि गुंजन की।
उन्नत कुच युग सरस रंग मगे वल्गूदर त्रिवलिनाभिसुखचंदन की।
पुष्टि नितंक काछनि सुंदर जंघ स्तभ कदली युग नंद नंदन की।
पद नूपुर कटि सुर्ण मेखला नख मणि गण छबि जग वंदन की।
श्रीशिव पद मन युगल बिहारी वरनी रति प्रिया मुख मंडन की।
पाऊ साधु सुसाध वहाई गाई रास केलि अरि गंजन की ॥१०॥

—❀—

अहो श्रीमुख जित शरच्चन्द्रमा वसन्तवातेन चलत्पटकुचा।
लोलायमान हरिवक्त्रचन्द्रिका चुचुम्ब राधा प्रमोदा कपोलम् ॥

निकुंज तल्पे वर वाटिकायां कलिन्दकन्या तट कानन स्थले।
विहार रागध्वनिमञ्जुभाषणं प्रियां सखी जल्पति वल्गु सुस्वरम् ।२

—❀—

श्रीराधे मा कुरु मान-मयेदं।
रसिक शिखामणि निर्गुण भूमन् नित्य निरंजन ब्रह्म अभेदं।
सो श्रीकृष्ण अखिल जग स्वामी गावत नेति नेतिहि वेदं ॥
धरत ध्यान निशि वासर मानिनि तब मुख पद्म रसज्ञभ्रमरेदं।
तव नाम सखि जपति कमलापति दृढ़ व्रत नेम समदम कृतखेदं ॥
हे व्रजपति वृजचंद्र कलानिधि तव मुख इंदु चकोरनयनेदं।
मानिनि मान तज सुभ्रुविलासनि भज क्षमस्व अपराधकृतेदं ॥
शिव पद पद्म पलाश विलाश कुतूहल श्याम सरोज स्वस्वेदं ॥११॥

—❀—

श्रीजी महाकमल दल लोचने।
अवगति अगम अपार असार जगत भय मोचने ॥
ललित विलासनि मंद स्वहासनि मनमथ वित्त विमोहने।
सुष्ठु भार नितंवनिगमनि विलंवनि चंद्रकला मुख शोभने ॥
चल सखी कुंजं विहर स्वयुंजं दर्शत प्रिय अनुरागं।
तब प्रिये कारण विपन विहारण हारण द्वंद मरागं ॥
ललित विलास मनोहर कोटि मदन सम वेषं।
चंद्रक चारु मयूर शिखंडक मंडित कुंतल केशं ॥
पीत वसन वनमाल विशालनि उन्नत कुच युग सरसं।
पुष्ठि नितंव स्वजंघ उपरना कटि भरण हृदि हरषं ॥
युगल पाद कमलाश्रित पद्म सुक्षरमकरंद प्रमादं।
भक्त रसिक आनन अवलोकत प्रघटत मन उनमादं ॥
कोटिक शरद कलानिधि सम वर्द्धत ब्रज अनुरागं।
भ्रूमंडित कुंडल युग झलकत शुभ्रकपोल मुखरागं ॥

उनमद मोद विघूर्णित लोचन सखि शृणु वंशीनादं।
शिव पद पद्म मुखी श्रीराधे मानिनी मा कुरु प्रियवादं ॥१२॥

—❀—

देख प्यारी यह कुंज बिहारी।
बोलत बैन रसाल शृणु नागरी सुकुमारी॥
देहि सुंदरि दर्शनं नहिं करत प्राण पयान।
पट नील आनन इंदु झाकत करिके बैठी मान॥
मानों नील घन में छिपि के बैठो शरद विधु रिसवान।
जाहि देखें नयन मे रहत विकसि कुंद समान॥
इंदु कुंद वियोग मानिनि अतिहि दुस्तरु जान।
तब दर्श विन छण विती तत्कोटि कल्प प्रमान॥
अब कृपा करि के दर्श दीजै रास जन ऋतुराज।
चटक गुलाव गुलाल केशरि रंग मृगमद मद साज॥
खेलत सबै वृज नागरी फाग प्रिये समाज।
अब नहि अवसर मान को प्यारी कुरु विहार रसराग॥
ऐसे सुनिके मानिनी शिवांघ्रि वंशी अनुराग॥१३॥

—❀—

अतो निकुंजे भवनं स्वरम्यं विहार पुंजं रस रास मंडनं।
प्रिया प्रियेण श्रीवल्लभेण सख्या सहस्त्रेण ययौ निजरम्य हर्म्यात्॥
श्रीराधा-कृष्ण पद पद्म मधु मादक पिवत रहो मन मधुकर।
ये पद ब्रज सुंदरि कुच कुंकुम लिप्त रसिक चित चुवत रस सखर॥
ये पद रमा स्वप्न दर्शित नहि शिव-हरि-ब्रह्म सनकादि सुरासुर।
परम हंस शुक नारद सारद वांछत निसि वासर गुण आकर॥
रसिक अनन्य ब्रह्मज्ञ मुकुट मणि धरत ध्यान संकर्षण वर।
ये पद भुजगराज फणा निर्तत टांडवकला परिपूर्ण ध्वनि कर॥
ये पद कमल कलिंद नंदनी पर्शत मोद विनोद निशाकर।

ये श्रीपदांघ्रि विपिन वृंदाबन कुंज कुंज मुद्रित गिरिवर ।।
ये पद रासमंडली अंतर निर्तत स्यामा स्याम कृपाभर।
ते पद पद्म पद्मज पद्मार्चित हरौ विपति शिवपद की श्रीवर ।।१४।।

—❀—

शरणागत हौं श्याम मानिनी ।
राखि लेउ व्रज कुल के नायक मैं हौं सखी तब रासगामिनी ।।
हिमकर शरद प्रमोद मालती रुचिर तुषा प्रिये विमल जामिनी ।
भटकी गयल अटकी रूप माधुरी मटुकी शिर धरि शिवांघ्रि-
भामिनी ।।१५।।

—❀—

गडोला दो विहार नगर को मार्ग श्रम वहु पायो ।
जन्म मरण द्वे पुर दरवाजे कर्मी वितान तनायो ।।
माया दुर्ग कठिन कर बांधो बीचसरक राजमार्ग आयो ।
सुंदर मार्ग सुखद सुहावन भक्ति अनन्य बनायो ।।
ताके तट द्वय विकटय नारीज्ञान वैराग्य वसायो ।
चौपरि चारु वजार अटपटो एक एक वर्ग जनायो ।।
काम क्रोध-मद लोभ मोहए पंच बाक्य कृतभायो ।
सुख दुःख लाभ अलाभ जयाजय पंक्ति द्वंद रचिपायो ।।
सीतल मंद सुगंध त्रिविध गुरा पवन सुरुचि सुख भायो ।
अहंकार कुतवाल महाभट वर्णाश्रम श्रम गायो ।।
तस्कर परम प्रवीन नगर स्त्रिय रूप स्वभक्त बनायो ।
क्षुधा-पिपासा जरा मृत्यु अरु शोक मोह ऋतु आयो ।।
चित्त वृत्ति कोटिक क्षण बीतत काल प्रवाह गणायो ।
राजा महा प्रवीन युग्म ज्ञाना ज्ञान सुहायो ।।
वैराग्य राग मैत्री वर मंत्र विचार सुनायो ।
प्रजा अनंत योनि सचराचर वारंवार भ्रमायो ।।

सौदा लेने चले हुतेउ सौदा वीच भ्रमायो।
नफा भई नहीं गांठ को झटो भली भई हरि पायो ॥
अव आप लगै है प्रभू द्वारसो नारायण तनु पायो।
वहुत कहा कहौ श्याम सुंदर घन सव कौ धोय वहायो ॥
दास अनन्य रसिक प्रभु नागर शिव पद शरणागत आयो ॥१५॥

—❀—

संसार वासना वद्धे गन्धर्वनगरोपमे।
कालव्यालवलाक्रान्ते दस्य्वादिभयपीड़िते ॥
मायापुटे शयानस्य प्रमत्त–मूढ़चेतसः।
शरणागतदासस्य मम मायां विनाशय ॥
न जाने राधिका-जाने न गीतं भगवत जसः।
न पीतं जान्हवी तोयं नाधीतं निगमागमम् ॥
मन्त्रग्रहणमात्रेण नरो नारायणो भवेत।
तथापि वैष्णवाः मन्त्राः सर्वमन्त्र फलोधिकाः ॥
प्रेष्ठी पिशाची या नारी निर्वाणस्य कपाटिका।
श्रृंखला प्रेमवीक्षा च जल्पन्तीदं शुचस्मिता ॥
तीक्ष्णासिना मया सद्यो मरणाय प्रकल्पते।
तथापि प्रमदामत्तो योषित्क्रीड़ामृगो मलन् ॥
अतोऽहं एण सदृशः हे प्रभो कर्णधारक।
मज्जन्तं प्रमोदा सुधौ मामुद्धारय मे गुरोः ॥
वन्देऽहं शंकरे देवं उमादेवीं सुमोहिनीं।
वाणेश्वरं व्रह्मविद्धं गंगागुणप्रसरणीम् ॥

—❀—

अली देखे हुते प्रिय प्यारी।
किए स्नान नेम जप संयम अरचि रह्यो लिए जल झारी।
चंदन हार कर्पूर अरगजा मृगमद वास शृंगार विहारी ॥

तंदुल विल्व विसाल पत्र रचि मृदु मादक मद लिए प्यारी।
तुलसी कमल मंजरी कोमल गंध धूप आरति गुण गण हारी॥
नटवर वेष काछिनी काछे मयूर मुकट चन्द्रिक छवि ने पारी।
नूपुर वलय नील पीत पट मुरली कमल सुरंगिम सारी॥
श्रीवृंदाबन कमल रास तट कुंजकदंव गिरि जहाँ त्रिपुरारी।
तहाँ वहुत द्रुम गिरि कलिंद नंदिनी नंदी गणपति शैल कुमारी॥
देखत सबै ब्रजवनिता राधे श्रीमत् शंकर कैलास विहारी।
दैकर गाठि सखी मुसकानी नमत दोऊ शिवपद हरि प्यारी॥१७॥

—※—

शिव शिव क्यों न रटो मन मेरे।
जिनको समान कृपालु नहीं कोऊ ब्रह्मादिक जिनके है चेरे।
एक चैतन्य सब हीयो व्यापक जड़ चैतन्य होत जिह हेरे॥
भरि करि कृपा देखे जब शंभू दुःख दमन होय तब तेरे।
उपजै भक्ति ज्ञान भय नाशै नेक कटाक्ष ह्याके फेरे॥
विघन विनाश जब करै गणाधिप दिढ बैराग्य होत सब केरे।
सो शंकर जब ते तू भूलो परम सखा परम गुरु तेरे॥
तब ते परो काल के फंदा भय संकट अरु दुःख घनेरे।
अब हों चेत शिवहि आराधो अशिव छोड़ि शिव पदको टेरे॥१८।

—※—

भज श्रीलक्ष्मी नारायण।
सनक सनंदन शिव सारद जन भजत भजत भए तारायण॥
श्रीमत्पद पद्मरज योगेंद्र ब्रह्म शुक धरत ध्यान शिवदायण।
भव मोचन रोचन मन मेरे युगलारुण शिव चरण पारायण॥१९॥

—※—

ऐसी वितरयो कि चित सौ चितु लायके।
जल डूवत गजराज उवारो पाय पिया दे धायके॥

भरी सभा मै लज्या राखी द्रोपदी चीर वढाके।
अजामिल से केते खल तारे नाम प्रताप दिखाय के॥
रक्षा कीनी पंडु सुतन को कौरव कुलै हि नशायके।
दीन दयाल भक्त प्रति पालक आयो शरण गुण गाय के॥
श्रीकृष्ण कृष्ण गोपी पति राधेवर प्रभु तुमहिं मनाय के।
केशव मोहन दामोदर धरणी धर नारायण हरि सुनाय के॥
शिव पद नाम प्रताप प्रचंड भानु तमगुण हिमहि नशाय के॥२०॥

—※—

विलसति रासे श्याम प्यारी।
चंद्रक चारु मयूर मुकुट शिर नील पीतपट सारी॥
नवदल जलज रसाल ललित कर मुरली ध्वनि मतवारी।
भृकुटी नयन चाप शर साधे मुनि मन मृग वधकारी॥
कुंडल लोल कपोल मनोहर अलकावली अनियारी।
नासा छवि शुक तुंड लजावत अधरबिंब द्युतिहारी॥
दाड़िम दशन हसन शशि कर्षसा वेसरि अलक न्यारी।
चिवुक कलित कर कंबु कंठ पर हारा वली समारी॥
भुज सौंदर्य्य सुंड गज निंदक मणिमय अंगद धारी।
अरुण कमल कर कंकण शोभत जात मैन रतिवारी॥
उर विशाल पर त्रिवली राजत कटि किंकिणि झनकारी।
कदली खंड जंघ युग सुंदर नूपुर चरण विहारी।
सूर्य्य कोटि अति लसत नखद्युति भक्त हृदय तम हारी।
ठाकुर शिव पद हृदै वसौ नित निरखि निरखि वलिहारी॥

—※—

भजत किशोरी रूप को मोहन गुण की रास।
मुरली मधुर वजावहि गावै प्रिया विलास।१॥

स्याम मुकुट मुर्ली लसत पीतांबर वनमाल।
मयूर चंद्रिका नीलपट भ्राजत रूप विशाल॥२॥
रूप मत्त मोहन प्रियहि पीवत भरि भरि नैंन।
घूम घूम झूमत उठत परत न रहत नहि चैन॥३॥
झूलत हिंडोलना सब सुख सागर नागर श्याम प्यारी।
नवघन नव वृन्दाबन धरणी नवल कालिंदी कारी॥४॥
नव कानन नव गिरिवर सोभत नव नभ तड़ित लतारी।
नव शरदेंदु इंद्रधनु साजे नव नव कुंज विहारी॥५॥
नव पीतांवर नवल चूनरी नव नव बूंद परत फूल झारी।
नव मुरली नव नवल नवीनी शिव पद पद्म मुखी श्रीपेयारी॥६॥

—❀—

॥२२॥

स्याम सुंदर संग खेलन जैहे नव नव रंग मचैहै।
मयूर मुकुट शिर अंसु पीतपट मुरली मधुर बजैहै॥
वैसी चलन कलन दन विहरन वैसी गाइ झुलैहै।
पद पद रास वढत रस सागर शिवपद पदध्वनि गैहै॥२३।

—❀—

श्यामा रूप मोहन मतवारो वर्नत कैसे वनै।
यों वाणी नयनन की पावै नयन श्रवण गिराइक ठाम जनै॥
चतुरानन शिव शेष नारदादिक शुनि शुनि मनहि मनै।
वाणी वुद्धि चित्त मन गोचर नहि आवत शिव पदकै भनै॥२४॥

—❀—

देखु सखी हरि मुख की शोभा आवत धेनु चराऐ।
कुंडल लोल कपोलन पर छवि अलकावली सुहाऐ॥
मयूर मुकुट गुंजन की माला गोरज मुख लपिटाऐ।
ललित त्रिभंग श्यामघन सुंदर मुरली मधुर बजाऐ॥
वनमाला मुक्तन की माला पीतवसन छवि छाऐ।

भू मंडल मकरध्वज लज्जत नयन वाण वर्षाऐ॥
संग सखा मंडली राजत विशद कीर्त्ति गण गाऐ।।
अंगद किंकिणि कंकण नूपुर नटवर वेष बनाऐ।
गोपी नयन आनंद बढ़ावत शिवपद पद मन भाऐ।।२५॥

—❀—

मोहन मुरली अधर धरी।
पति सुत छाड़ि चली व्रज वनिता प्रेम महगन हरि भरी॥
ब्रह्मा विष्णु कोटि रुद्रादिक माया विवश करी।
मोहे ध्वनि सुनि सकल चराचर जाति प्रकृति विसरी॥
पशु विहंग द्रुम मीन सुरासुर विसरत नेम धरी।
शिव पद पद न परत अब सूधे बोलत राधे श्याम हरी।।२६॥

—❀—

जय जय राधा कृष्ण प्यारी।
जगत जीव स्थावर जंगम जिन करि चैतंन्यांयत वपुधारी।
आदि अनादि अगम श्रीयोरी निगम गिरा लक्ष्य पुकारी॥
जिनके अंश कोटि विष्णवादिक अव्याकृति ईश्वर गुणकारी।
महा विराट कला सो रही ब्रह्मांड अनंत रोम प्रतिधारी॥
जिनके चरण कमल नखद्युति निर्गुण ब्रह्म परम अविकारी।
श्रीराधा कला कला कोटिक यो दुर्गादिक प्रकृति गुणकारी॥
तिन के पद पद्म पलाश विलाश चंद्रमा उठत तरंग न्यारी।
शिव पद रसिक अनन्य मगन होय भजत भजत प्रिय प्यारी।।२७॥

—❀—

श्री गोवर्द्धन धर लाल विहारी।
नटवर वेष काछिनी काछे अरुण पीत पट सारी॥
मयूर मुकुट मुरली घन घोरन अलकावली अन्यारी।
श्याम स्वरूप मुख चंद्र विराजत नयन कमल गिरिधारी॥

सप्त दिवस लौं नग नख राख्यो पद न चलों एकवारी।
श्रीराधा कृपा अवलोकित दृग भारी शिवपद प्रभु पदवारी ॥२८॥

—❀—

जय जय जय श्री गुरु हरिदेव।
जय जय श्रीयुगल उपासिक श्रीवलदेव।
आरति करत सकल व्रज वनिता जय जय करत सिद्ध मुनि देव।
नटवर वेष मत्त वारण सम संग सखा सुरवृंद॥
रसिक प्रवीन रास रस मादक अरुण नयन मुखचंद।
नीलदूकूल नील मणि भूषण हलधर आनंद कंद॥
मयूर मुकुट कुंडल युग मंडित वंदित सूरज चंद।
चरण कमल कमलागण वंदित खंडित भक्त हृदै दुःख द्वंद्व॥
गौर स्वरूप तड़ित स्वर्ण आभा सोभत माल तुलसिका कुंद।
इह आरति आरति सब जनकी हरत करत आनंद॥
शिव पद पद्म मन बहु रंग भृंगी होत न मंद॥२९॥

—❀—

जय जय हे मम दुःख विनाशिनि रास विलासिनि चंद्र मुखे।
तरुण किरण नव अरुण नखद्युति ज्ञान प्रकाशिनि पूर्ण सुखे॥
शरणागत पालनि मणिगण मालनि चंद्रक भालनि विज्जु छटे।
प्रभु हृदि मानस विमल सरोरुह प्रभा विकाशिनि हंस गते॥
तव पद पद्मे मम चित सद्मे वारण वृंद विदारणे।
सुभग तरंगे श्रीपति संगे भव भय भंगे स्वर्ण तटे॥
शिव मुख मंडे शरसिज खंडे वास विलासनि सूक्ष्म कटे।
वृंदावन चंद्रे निर्गततंद्रे गोलोक निवासिनि नीलपटे॥
मदगजगामिनी विकसित कामिनि सखिगण किरणकलानने।
शरद कमल दल मोचन लोचन रोचन छवि तनु खंडने॥
तव चरण सरोरुह पांशु मनोभव खंडने मम मानस मंडने।
इदमनु भवममृतं शिवपद ललितं मुख गलितं कलिखंडने॥

जयति जयति व्रज कमल प्रभाकरं सततं नमामि नंद नंदन
इदं मया ते परिभाषितं प्रिये राधाकृपापांगविसर्ग रंजितं
यद्धयानसाध्यं सदसत्परात्परं व्रजति वै श्रीमत् रासमंडलं ॥३॥

— ❀ —

न यत्र सर्गो गुणसंप्रवाहः नाज्ञानसंज्ञौ भववन्धमोक्षौ।
विज्ञानमात्रमजन्नित्यमव्ययमादित्यवर्णं तमसः परं यत
तस्मिन्महाज्ञानमये सुमण्डले वृन्दावने वृन्दसखीभिरावृते
विक्रीड़तौ नित्यसुखात्मभास्वतौ शिवसखौ श्रीमच्छ्यामविग्रहं
किरीटिनौ कुंडलिनौ स्त्रमालिनौ विभ्रातौ पद्मदलायतेक्षणौ
सल्लीलपीतौ नववंशवादिनौ सुचन्द्रिकौ नूपुरसूत्रककणौ
कृपाकटाक्षेण प्रकाशितौ जगत् ध्यायामि रासे निजजीवितेशौ ।३

— ❀ —

पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानंद नंदनंदन।
आनंद कंद जसुदानंद श्रीगोविंद ॥ टेक ॥
दीनानाथ दुखभंजन भक्तवछल जग वंदन जगन्नाथ जग
जीवन काटत दुख द्वंद फंद ॥ करुणामय कमल नयन कृपासिंधु सर्व
चैन पूरण कर्त्ता किशोर गुण निधान गोकुल चंद ॥ मधुसूदन मदन
मोहन मुरलीधर सर्व शोहन मेघ स्याम मूरति मन भावन मुकुंद ॥
माधौ राम रूप राधेवर गोवर्द्धन धर पर धर रंगनाथ हृषीकेश गुण
गावत भए अनंद । जन गरीव जश सुनि सुनि लागि रही अंतर ध्वनि
वासुदेव वनमाली ब्रजपति प्रभु दीन वंधु ॥३२॥

— ❀ —

सदा आनंद मंगल मेरे हियें ।
तमु सोवे रुह निशि दिन जागे आठ प्रहर पिय पिउ कहियें ॥
इस्क सुराई प्रेम को प्यालो अंतर रूप छके रहियें ।
अब महाप्रसाद और चरणोदक जंह सुख साधन मैं पइयें ॥

गाठ प्रहर चौसठी घरी श्रीयुगल चरण लौ ल्याइ रहियै।
त्रसाल भज नाम धनी को और देव (कहा) पैं चषइयै ॥३३॥

---❀---

(सारंग)

श्री गिरिधरन लाल की वलिहारी।
वाम भुजा गिरिवर को राखत मुकुट मुरलिका धारी।
कटि तट पीत वसन की काछनि किंकिणि कलख न्यारी।
मुकुट झुकनि मन हरेहि लेत हैं उर वनमाल भृमरारी॥
व्रजवधु नयन चकोर चंद्रमा पाय ताप श्रम हारी।
शिवपद पद पदवी निजु राखी श्रीप्रभु दीन उद्धारी॥३४॥

---❀---

(देव गिरि)

म्हानें नैनों दीवानि परीरे।
विन देखे मैनूं मोहन पिय लावै नीर झुरीरे॥
वन कौं जावै वेणु वजावै गावै देवगिरी रे।
दास अनन्य दास शिवपद कौ होरी रंग भरीरे।॥३५॥

---❀---

मुद्रक—जो० डी० भरतिया, श्रीकृष्ण पब्लिशिङ्ग हाऊस प्रेस, मथुरा।